International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 01-03
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-03-2017
Accepted: 03-04-2017

**वागीश मिश्र**
शोधच्छात्र,संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

**Correspondence**
**वागीश मिश्र**
शोधच्छात्र,संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

# ऋक् संहिता में इन्द्र–एक परिचय

**वागीश मिश्र**

**प्रस्तावना**

आर्यों की सभ्यता व साहित्य का आरम्भ वेदों के आविर्भाव से हुआ है। वेदों को जितना प्राचीन प्रतिपादित किया जा सकता है, आर्य जाति का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है। भारतीय धर्म साहित्य, भाषा, सभ्यता, संस्कृति, कला इन सभी के विकास व उन्नति में वेदों का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इन सबका मूल आधार वेदों को ही स्वीकार किया जाता है।

विश्व के सम्पूर्ण ज्ञान का उद्‌गम स्थान वेद हैं। प्रारम्भ में वेद राशि एक ही थी। कालान्तर में महर्षि कृष्णद्वैपायन (वेदव्यास) ने उसका चार संहिताओं के रूप में संकलन किया। ये संकलन ही ऋग्वेद संहिता, यजुर्वेदसंहिता, सामवेदसंहिता व अथर्ववेद संहिता कहलाये। वेद चतुष्ट्य में ऋक् संहिता अनन्य है। ऋक् का अर्थ है स्तुतिपरक मन्त्र 'ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्।' जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है, उन्हें ऋक् कहते हैं। वेदार्थ को समझने के लिये देवता ज्ञान अपरिहार्य है। वेंकटमाधव के अनुसार देवता ज्ञान सम्यक् ज्ञान तपोबल या योगबल से ही सम्भव है।

देवतातत्वज्ञानं महता तपसा भवेत्। (ऋग्वेदानुक्रमणी)

ऋक् संहिता दश (10) मण्डलों में विभक्त है जिनमें कुल 1028 सूक्त हैं। ऋक् संहिता के 250 सूक्तों में इन्द्र की स्तुति स्वतंत्र रूप से व 50 सूक्तों में अन्य देवताओं के साथ की गयी है। इस प्रकार ऋग्वेद का लगभग चतुर्थांश इन्द्र के ही गुणगानों से भरा हुआ है। प्रस्तुत आलेख में ऋक् संहिता के आधार पर इन्द्र का परिचय दिया गया है।

जगत् में घटित होने वाली प्रत्येक प्राकृतिक घटना के पीछे वैदिक ऋषि किसी दैवी शक्ति की सत्ता स्वीकार करते थे। उन्हीं शक्तियों को विविध देवता मानकर उनसे अभीप्सित अर्थ की सिद्धि के लिये प्रार्थनाएं किया करते थे। देवताओं की स्तुति करते समय ऋषि उनमें समस्त गुणों को आरोपित करते थे।

आचार्य यास्क ने वैदिक देवों की तीन भागों में विभक्त किया है–1, पृथ्वी स्थानीय देव 2. अन्तरिक्ष स्थानीय देव 3. द्युस्थानीय देव।[1] अन्तरिक्ष स्थानीय देवताओं में इन्द्र, मातरिश्वन, रूद्र, मरुद्‌गण त्रित्, आप्तय, अपांनपात्, वायु, पर्यन्य, आपः की गणना की गयी है।

वैदिक युग के देवों में इन्द्र शक्ति, बल, ओज, व वीरता के प्रतीक हैं। उनकी महत्ता का अनुमान इसी से हो सकता है कि उनकी स्तुति में कहे गये सूक्तों की संख्या ऋग्वेद में सर्वाधिक है। ऋग्वेद में वे सर्वाधिक मानवीय तत्वों से परिपूर्ण देवता हैं। इन्द्र का वैयक्तिक रूप इतना प्रबल है कि उनके मौलिक प्राकृतिक रूप का पता लगाना असम्भव सा है।

इन्द्र नाम जो भारतीय ईरानी काल का है तथा जिसका अर्थ अनिश्चित है, किसी प्राकृतिक घटना का वाचक न होने के कारण इन्द्र का व्यक्तित्व अत्यधिक मूर्तीकृत हो गया है, और वास्तव में वेदों के किसी भी अन्य देवता की अपेक्षा यह पुराकथा शास्त्रीय कल्पनाओं से कहीं अधिक परिपूर्ण है।

यास्क ने इस शब्द की तेरह प्रकार से व्याख्या की है–

1. इरां दृणाति। इरां ददाति। इरां दधाति। इरां दारयते। इरां धारयते।
2. इन्देव द्रवति। इन्दौ रमते
3. इन्धे भूतानि (तद् यदेनं प्राणैः समैन्धन् तदिन्द्रस्य इन्द्रत्वम् इति विज्ञायते)
4. इदं कारणात् (इति आग्रयणः) इदं दर्शनात् (इति औपमन्यवः)
5. इन्दतेर्वा ऐश्वर्यकर्मणः, इदं (शत्रूणां) दारयिता आदरपिता वा (यज्वनाम्) इति।[2]

ये व्यख्याएं, उपर्युक्त प्रकार के 5 खण्डों में वर्गीकृत की जा सकती है। पहले प्रकार की व्याख्या इरा या अन्न से सम्बन्धित है। वर्षा देवता होने के कारण इन्द्र अन्न के बीजों को प्रस्फुटित करते हैं। अन्न को धारण करने या प्रदान करने के कारण उन्हें इरादः इराधः या इराधः कहा जाता है जो 'इन्द्र' में बदल जाता है।

इन्दु अथवा सोम के लिए दौड़ कर आने के कारण या सोमपान में आनन्द लेने के कारण वे इन्दुद्रवः या 'इन्दुरमः' है। ब्राह्मणों में प्राणों को इन्द्र कहा गया है। इन्ध् धातु का अर्थ है प्रदीप्त करना। प्राण समस्त शारीरिक वृत्तियों को प्रदीप्त करते हैं अतः वे इन्द्र है, आग्रयण व औपमन्यव का मत है कि समस्त संसार का निर्माण करने या इसके द्रष्टा होने के कारण (इदंकरः, इन्दंदृशः)वे इन्द्र है। इन्द् धातु ऐश्वर्य या सामर्थ्य वाची है। अपने ऐश्वर्य (इदं) से वे याज्ञिकों के शत्रुओं को नष्ट करते अथवा भगाते हैं अतः 'इदं–दरः' आदि मूल शब्दों से भी इन्द्र की निष्पत्ति हो सकती है।

पाणिनीय धातु पाठ में 'इदि परमैश्ववर्ये धातुप्राप्त होती है। इससे औणादिक र, रक् या रन् प्रत्यय लगाकर इन्द्र शब्द को लौकिक व्याकरण में सिद्ध किया गया है।

इन्द्र सबसे अधिक स्पष्ट व्यक्तित्त्व वाले देवता है। उनकी सिर, उदर, भुजाओं का वर्णन किया गया है। उनके शिप्र (ओष्ठ या हनु) का भी प्रायः वर्णन आता है। 'सुशिप्र' विशेषण उनके लिए प्रायः प्रयुक्त हुआ है। उनकी दाढ़ी व मुछे भी हैं जो सोमपान के पश्चात हिलने लगती है। [3] वे सूर्य के समान तेजस्वी हैं। कठोर व सशक्त बाहु वाला होने से बज्रवाहु कहा गया है। अपनी माया के द्वारा वे चाहे जैसे बन जाते हैं। [4]

ऋग्वेद में द्यौः को इन्द्र का पिता बताया गया है। [5] एक स्थान पर इन्द्र की माता को ग्रन्थि या गौ बताया गया है इसलिए उन्हें गार्ष्टेय कहा गया है। उनके उत्पन्न हाने पर द्यावापृथिवी काँपने लगे थे। उत्पन्न होते ही वे महान् व अजेय योद्धा बन गये व देवों को उन्होंने अपने कार्यों से अभिभूत कर दिया।[6]

इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी का उल्लेख भी ऋग्वेद में है।[7]

ऋग्वेद में इन्द्र व इन्द्राणी में सुन्दर वार्तालाप प्राप्त होता है जिसमें इन्द्राणी इन्द्र से उनके वानर वृषाकपि द्वारा अपने उद्यान के नष्ट दिये जाने की शिकायत करती है। इन्द्र के लिए शचीपति विशेषण भी प्रायः प्रयुक्त हुआ है।

इन्द्र का यान सुनहला रथ है, जिसकी गति मन से भी तीव्र है। इनके रथ अनेक अश्व खींचते हैं इस रथ पर इन्द्र श्येन की भांति आकाश में उड़ते चले जाते है।[8] रथेष्ठा (महारथी) विशेषण विशेष रूप से इन्द्र के लिए आया है।

इन्द्र का अपना विशेष अस्त्र वज्र है, जो तडित् या विद्युतगर्जन का ही प्रतीक है। इस वज्र को इन्द्र के लिए त्वष्टा ने बनाया है। इसें दो सौ पर्व है व एक सहस्र नोकें हैं। इन्द्र इसे वीर कर्मों के लिए धारण करते है।[9]

सम्पूर्ण वैदिक देवताओं में इन्द्र सोमपान करने के सर्वाधिक अभिलाषी है। जितना सोम वे पीते हैं, उतना कोई भी मनुष्य या देवता नहीं पी सकता। सोम उनका सर्वाधिक प्रिय पेय है। मुख्यतः उन्हीं के लिए सोम का सेवन होता है।[10]

उत्पन्न होते ही उन्होंने सर्वप्रथम सोमपान किया।[11] व्रतदान के वध के लिए शक्ति संजययार्थ उन्होंने सोम के तीन ह्रदों का पान किया था। ब्रह्मवेद में सोम व इन्द्र का यह सम्बन्ध इतना घनिष्ठ है कि लगभग असम्भव है कि सोम के किसी सूक्त में इन्द्र का उल्लेख न हो। सोमपा विशेषण इन्द्र के लिए विशेष रूप से प्रयुक्त हुआ है।[12]

इन्द्र को अनेक अन्य देवताओं के साथ ही सम्बद्ध किया गया है। इनके प्रमुख मरूद्गण है। जिनका असंख्य स्थलों पर इन्द्र के युद्ध अभियानो में इनकी सहायता करने वालों के रूप में उल्लेख है। इन देवों से इन्द्र का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि मरूत्वान् उपाधि इन्द्र की ही विशेषता है।[13]

अग्नि के साथ इन्द्र को एक युगल देव के रूप में किसी भी अन्य देव की अपेक्षा कहीं अधिक बार संयुक्त किया गया है। यह स्वभाविक भी है, क्योंकि विद्युत भी अग्नि का ही रूप है। यह भी कहा गया है कि इन्द्र ने दो पत्थरों के बीच से अग्नि को उत्पन्न किया[14]– यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान.....

इन्द्र को कभी–कभी वरूण व वायु के साथ व अपेक्षाकृत कुछ कम स्थानों पर वृहस्पति, पूषन व विष्णु के साथ समीकृत किया गया है।

इन्द्र ऋग्वेद का सर्वाधिक लोकप्रिय व महत्वपूर्ण देवता है। ऋग्वेद में इन्द्र से सम्बन्ध सूक्तों का आधिक्य इस बात का द्योतक है कि तपः पूत ऋषियों ने इन्द्र को सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता माना है।

इन्द्र ने जन्म लेते ही समस्त देवताओं को अपने पराक्रम से अभिभूत कर दिया। इनके पौरुष की महिमा से द्युलोक व पृथिवी लोक कांप गये। [15] इन्द्र आर्यों को अनार्यों के विरूद्ध युद्ध में सहायता प्रदान करके विजयी बनाते है। इसलिए वे अपने अपूजकों व विरोधियों का वध करते हैं। इन्द्र अपने भक्तों की रक्षा व सहायता करते है। इन्द्र ने अस्थिर पृथिवी को स्थैर्य प्रदान किया।

इन्द्र ने सूर्य व उषस् को उत्पन्न किया व बल प्रदर्शन करते हुए अहि नामक दैत्य को मारकर सात नदियों को प्रवाहित होने के लिए उन्मुक्त किया। [16] इन्द्र ने भयवशात् पर्वतों में छिपे शम्बर नामक असुर को 40वें वर्ष ढूंढ निकाला व उसका वध किया। [17]

असुरों के जिन पुरो या पर्वतों का उल्लेख किया गया है, वे मेघ के ही प्रतीक है। वृत्र व अन्य दैत्य इन्हीं पुरों पर पर्वतों में छिपे रहते है व इन्द्र मेघ रूपी पुरों को नष्ट करके उनका वध करते हैं। असुरों के इन पुरो का विभेद करने से उनका पुराभिद् या पूर्भिद् एक सामान्य विशेषण है। [18] इन्द्र ने कम्पायमान पर्वतों को स्थिर किया। (यः पर्वतान् प्रकुपितान् अरम्णात्।)[19] पर्वत पहले इच्छानुसार इधर–उधर उड़ते रहते थ [20] किन्तु इन्द्र ने उनका विनाश कर दिया। मैत्रायणी संहिता में इसी आधार पर कहा गया है कि पहले पर्वतों के पंख थे। वे जहां चाहते थे, वहां उतर जाते थे, अतः पृथिवी काम्पित होती थी किन्तु इन्द्र ने उन्हें काट डाला, कटे हुए पंख मेघ बन गये। अतः आज भी मेघ पर्वतों के पास जाते हैं। क्योंकि वे वही से उत्पन्न हुए हैं।

प्रजापतेर्वा एतद् ज्येष्ठं तोकं यत्पर्वतः। ते पक्षिण आसन्। ते परापातम् आसत्, यत्र तत्र आकमयन्त। अय वा इयं तर्हि शिथिरा आसीत्। तेषाम् इन्द्रः पक्षान् आच्छिनत्। तैः इमाम् अदृंहद् ये पक्षा आसन् ते जीमूता अभवन् तस्माद् एते सपदि पर्वतम् उपप्लवन्ते। योनिर्हि एषाम् एषः[21]

ऋग्वेद के एक पूरे सूक्त में सरमा व पणियो की मनोरंजन कथा प्राप्त होती हैं पणि इन्द्र की गायों को चुरा ले जाते हैं। इन्द्र अपनी सरमा नाम शुनि को उनका पता लगाने के लिए भेजते हैं। पणि उसको प्रलोभन देते हैं परन्तु सरमा प्रलोभन स्वीकार नहीं करती। बाद में इन्द्र उसके पदचिन्हों पर जाकर पणियों का पता लगाते हैं व युद्ध करते हैं।[22]

इन कार्यों के अतिरिक्त इन्द्र ने बल नामक राक्षस के बाड़े से गायों को बाहर निकाला। [23] स्वर्ग में चढ़ते हुए रौहिण नामक असुर को भी इन्द्र ने ही अपने शरू नामक वज्र से मार डाला था। [24]

सम्पूर्ण रूप से देखने पर इन्द्र के गुणों में प्रमुखतः भौतिक संसार पर प्रभुत्व व प्राकृतिक श्रेष्ठता का भाव ही लक्षित होता है। सक्रिय कृत्य इनकी विशेषता है। इन्द्र एक सार्वभौमिक सम्राट है, जिनका शक्तिशाली हाथ विजय अर्जित करता है। इन्द्र की अक्षय उदारता मानवों को श्रेष्ठतम् समृद्धियाँ प्रदान करती है। वैदिक देवताओ में इन्द्र का स्थान सर्वोपरि है इसीलिए परवर्ती साहित्य में इन्द्र को देवताओं का राजा माना गया है।

आध्यात्मिकता की दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति में सद् व असद् प्रवृत्तियां व्याप्त है। इन्द्र सद् प्रवृत्तियों का तो वृत्र आदि असुरगण असद् प्रवृत्तियों के वाचक है। इन्हीं दोनों के मध्य होने वाला देवासुर संग्राम सभी व्यक्तियों मध्य चल रहा। आसुरी वृत्तियों को नष्ट कर दैवी गुणों को विजय प्राप्त करवाना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। दैवीगुणों का जीवन में विस्तार हो तभी वेदाध्ययन की सफलता है।

## संदर्भ ग्रंथ


1. तिस्रः एव देवता इति नैरुक्ताः (निरुक्त 6–5)
2. नि0 10/1/8
3. प्र दोधुवत् श्मश्रुषु प्रीणाने याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिम्। (ऋग्वेद 01–2/11/17

4. इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते (ऋग्वेद 6/47/18)
5. सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौः इन्द्रस्थकर्ता 4/17/4
6. ऋग्वेद 4/17/2, 3/5/18, 2/12/2
7. ऋग्वेद 1/22/12, 2/32/8
8. ऋग्वेद 8/33/9
9. त्वष्टा यद् वज्रं सुकृतं हिरण्ययं सहस्रभृष्टिं स्वपा अवर्तयत्। (ऋग्वेद 1/85/9)
10. इन्द्रयोयेन्दो परिस्रब, ग्रह0 9/112/1
11. त्वं सद्यो अपिबो जात इन्द्र, मदायसोमप् 3/32/20
12. यः सोमया निचितो........2/12/13
13. ऋग्वेद, 5/4/9, 9/65/10
14. ऋग्वेद, 2/12/3
15. ऋग्वेद, 2/12/1
16. ऋग्वेद, 2/12/3
17. ऋग्वेद, 2/12/11
18. ऋग्वेद, 10/111/10
19. ऋग्वेद, 2/12/2
20. ऋग्वेद, 4/54/5
21. मैत्रायणी संहिता–1/10/13
22. ऋग्वेद, 10/108
23. ऋग्वेद, 2/12/3
24. ऋग्वेद, 2/12/12